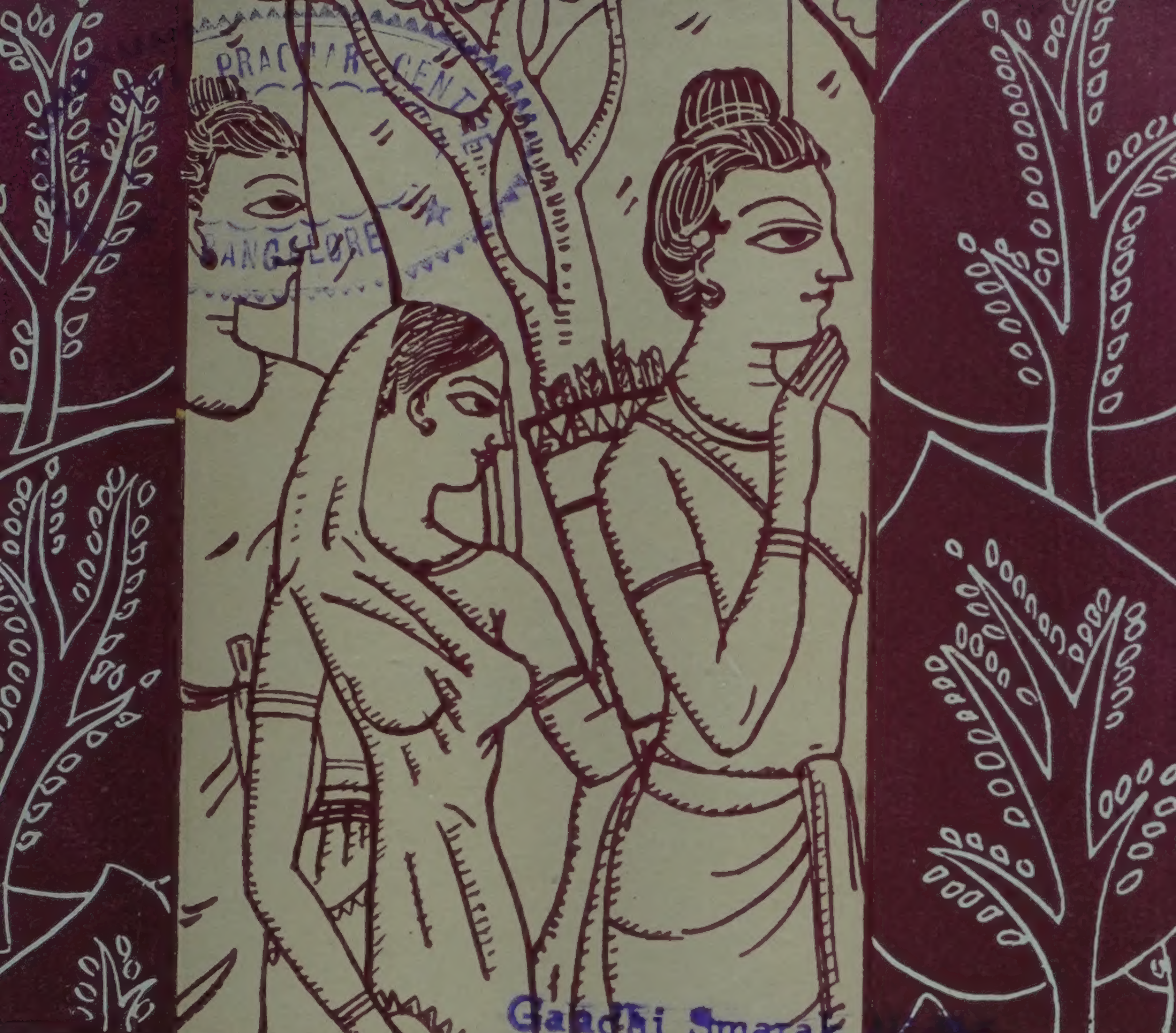




लंका दहन



लसी

कथा

तुलसी-राम-कथा—१०

लंका-दहन

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

तुलसीदासजी के 'रामचरित-
मानस' के आधार पर
भगवान राम की
सरल एवं रोचक कहानी

सत्साहित्य प्रकाशन
१९५८

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
१० दरिया गंज,
दिल्ली.

प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा; क्या शहरी, क्या ग्रामीण; सभी राम का नाम सुनकर गद्गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम-कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी उन्हें आसानी से समझ सकें और उसमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर इस पुस्तकमाला का श्रीगणेश किया जा रहा है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रमबद्ध घटनाएं लेकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी डाल दिये गये हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुंचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गये हैं।

मंत्री

विषय-सूची

लंका-दहन

: १ :

अशोक-बाटिका में युद्ध

सीताजी की आज्ञा पाकर हनुमानजी ने उन्हें सिर झुकाकर प्रणाम किया और बाग में घुस गये। वहां उन्होंने मीठे-मीठे फल खाये और पेड़ उखाड़ फेंके। उन्होंने बहुत-से रखवालों को भी मार डाला। बचे-खुचे रखवालों ने भागकर रावण के दरबार में पुकार की। उन्होंने रावण को बताया कि बाटिका में एक बड़ा भारी वानर आया है। उसने अशोक-बाटिका को उजाड़ दिया है और बहुत-से रखवालों को पकड़-पकड़कर मसल-मसलकर मार डाला है।

सुनि रावन पठए भट नाना।
तिन्हहिं देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संघारे।
गये पुकारत कछु अधमारे ॥

रावण ने रखवालों की बात सुनकर अपने बहुत-से योधाओं को बाग में भेजा। हनुमान उनको देखकर गर्जने लगे। उन्होंने बहुत-से राक्षसों को मार डाला। उनमें से कुछ, जो अधमरे-से थे, वे चिल्लाते हुए रावण के पास पहुंचे। जब रावण ने यह सुना कि वानर ने उसके बहुत-से रखवाले मार डाले तो उसने अपने पुत्र

अक्षयकुमार को भेजा। वह असंख्य श्रेष्ठ योद्धाओं को लेकर चला। जब वह बाटिका में पहुंचा तो हनुमान ने पेड़ उखाड़कर उसे ललकारा और कुछ ही देर में उसको मार डाला। उसे मारकर वह बड़े जोर से गर्जे। फिर उन्होंने उसके साथ के बहुत-से योद्धा भी मार दिये। कुछ बचे हुए योद्धा भागकर फिर रावण के पास पहुंचे। उन्होंने रावण को अक्षयकुमार के मारे जाने का समाचार सुनाया और बताया कि वह वानर बहुत ही बलशाली है।

सुनि सुतबध लंकेस रिसाना।
पठएसि मेघनाद बलवाना॥
मारसि जनि सुत बांधेसु ताही।
देखिअ कपिहिं कहां कर आही॥

पुत्र के मरने की खबर सुनकर रावण क्रोध में भर उठा। इस बार उसने अपने बड़े पुत्र महाबलशाली मेघनाद को भेजा। रावण ने उससे कहा, "हे पुत्र ! तू उसे मारना नहीं, बांधकर ले आना। देखना है कि वह वानर कहां से आया है।"

चला इंद्रजित अतुलित जोधा।
बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा॥
कपि देखा दारुन भट आवा।
कट कटाइ गर्जा अरु धावा॥
अति बिसाल तरु एक उपारा।
बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा॥
रहे महाभट ताके संगा।
गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा॥

तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा।
भिरे जुगल मानहुं गज राजा ।।
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई।
ताहि एक छन मुरुछा आई ।।
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया।
जीति न जाइ प्रभंजन जाया ।।

रावण की आज्ञा पाकर मेघनाद हनुमानजी को पकड़ने के लिए चल दिया। भाई के मारे जाने से वह बहुत क्रुद्ध था। उसे आता देखकर हनमान बहुत जोर से गर्जने लगे। वह समझ गये थे कि इस बार भयानक योद्धा आया है। उन्होंने एक बड़ा भारी पेड़ उखाड़ लिया और उसे इस तरह फेंका कि जिससे मेघनाद का रथ टूट गया और वह रथ के नीचे गिर गया। हनुमान ने उसके साथ के बहुत-से योद्धाओं को मसल-मसलकर मार डाला। वह फिर मेघनाथ से लड़ने लगे। लड़ते समय वे दोनों ऐसे लगते थे जैसे दो श्रेष्ठ हाथी भिड़ गये हों। उन्होंने मेघनाद को एक जोर का घूंसा मारा और पेड़ पर जा चढ़े।

मेघनाद क्षणभर के लिए संज्ञाहीन हो गया, लेकिन दूसरे ही क्षण उठकर उसने बहुत तरह की माया रची और हनुमानजी को पकड़ने की कोशिश की। परंतु वह उसके वश में नहीं आये।

ब्रह्म अस्त्र तेहिं साधा कपि मन कीन्ह विचार।
जौं न ब्रह्मसर मानऊं महिमा मिटइ अपार।।

ऐसी दशा में अंत में उसने ब्रह्मास्त्र को संभाला और उसका प्रयोग किया।

हनुमानजी अपने मन में सोचने लगे कि अगर मैं ब्रह्मास्त्र का आदर नहीं करता हूं तो उसकी महिमा घट जायगी। इसलिए इसके प्रयोग किये जाने पर वह शांत रहे।

: २ :

रावण कीसभा में

ब्रह्मबान कपि कहुं तेहिं मारा।
परतिहुं बार कटकु संघारा।।
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ।
नाग पास बांधेसि लै गयऊ।।

मेघनाथ ने हनुमानजी के ब्रह्मबाण मारा। उसके लगते ही हनुमान पेड़ से नीचे गिर पड़े। गिरते समय उन्होंने मेघनाद की बहुत-सी सेना मार डाली। फिर वह मूर्च्छित होगये। जब मेघनाद ने हनुमानजी को मूर्च्छित देखा तो उसने उन्हें नागपाश में बांध लिया। इसके बाद वह उन्हें रावण के दरबार में ले गया। रामदूत को क्या कोई बांध सकता था परंतु प्रभु के काम के लिए हनुमानजी ने स्वयं अपनेको बंधा लिया।

कपि बंधन सुनि निसिचर धाए।
कौतुक लागि सभा सब आए।।

जब हनुमानजी रावण की सभा में पहुंचे तो उनको देखने के लिए चारों ओर से बहुत-से राक्षस दौड़े आये। रावण भी हनुमानजी को देखकर हँसा। लेकिन फिर उसके हृदय में अपने पुत्र के मारे जाने का दुःख पैदा हुआ।

कह लंकेस कवन तैं कीसा।
केहि कें बल घालेहि बन खीसा।।

की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही ।
देखउं अति असंक सठ तोही ॥
मारे निसिचर केहिं अपराधा ।
कहु सठ तोहि न प्रान कई बाधा ॥



रावण की सभा में

रावण ने हनुमानजी से पूछा, "हे वानर, तू कौन है ? तूने किसके बल पर बाग को उजाड़ डाला ? क्या तूने अपने कान से मेरा नाम और यश नहीं सुना । हे मूर्ख ! मैं देखता हूं कि तू बड़ा ही निडर है ।"

रावण ने हनुमानजी से यह भी पूछा, "तूने राक्षसों को किस कारण मार डाला ? क्या तुझे अपने प्राणों की चिंता नहीं ?"

धरइ जो विविध देह सुरत्राता ।
तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ।।
हर को दण्ड कठिन जेंहि भंजा ।
तेंहि समेत नृपदल मद गंजा ।।
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली ।
बधे सकल अतुलित बलसाली ।।
जाके बल लवलेस तें, जितेहु चराचर जारि ।
तासु दूत मैं ज़ा करि, हरि आनेहु प्रिय नारि ।।

हनुमानजी ने श्रीराम के यश का बखान करते हुए कहा, "जो देवताओं की रक्षा के लिए बार-बार जन्म लेते हैं, जो तुम्हारे जैसे मूर्खों को शिक्षा देनेवाले हैं । जिन्होंने शिवजी के कठोर धनुष को तोड़ डाला, और उसीके साथ राजाओं का गर्व चूर कर दिया है । जिन्होंने खर, दूषण, त्रिशिरा और बाली को मार डाला, जिनके तनिक से बल से तुमने चराचर जगत को जीत लिया और जिनकी पत्नी को तुम छल से हरकर ले आये हो, मैं उन्हीं भगवान राम का दूत हूं ।"

जानउं मैं तुम्हारि प्रभुताई ।
सहस्रबाहु सन परी लराई ।।
समर बालि सन करि जसु पावा ।
सुनि कपि बचन बिहंसि बहरावा ।।

"मैं तुम्हारे बल को जानता हूं । मझे मालूम है कि तुम्हारी सहस्त्रबाहु से लड़ाई हुई थी । तुमने बाली के साथ लड़कर क्या यश पाया था ?"

रावण हनुमानजी की इस प्रकार की बातों को सुनकर हँस

दिया। उसने हनुमान को किसी तरह का उत्तर नहीं दिया। हनुमान फिर कहने लगे--

खायेउं फल प्रभु लागी भूखा।
कपि सुभाव तें तोरेउं रूखा।।
सबके देह परम प्रिय स्वामी।
मारहिं मोहिं कुमारग गामी।।
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे।
तेहि पर बांधेउं तनयं तुम्हारे।।
मोहिं न कछु बांधे कह लाजा।
कीन्ह चहऊं निज प्रभु कर काजा।।

"राजन! मुझे भूख लगी थी। मैंने अपनी भूख मिटाने के लिए फलों को खा लिया। वानर-स्वभाव के कारण मैंने बाग के पेड़ों को तोड़ दिया। हे राक्षसों के राजा, सबको अपना शरीर प्यारा होता है। कुमार्ग पर चलनेवाले राक्षस जब मुझे मारने लगे तो मैंने भी उनको मारा। मैंने केवल उनको ही मारा जिन्होंने मुझे मारा था। इतना होते हुए भी तुम्हारा पुत्र मेघनाद मुझे बांधकर यहां पकड़ लाया है। मुझे अपने बांधे जाने में किसी प्रकार की लज्जा नहीं है, मैं तो अपने स्वामी का कार्य करना चाहता हूं।"

बिनती करउं जोरि कर रावन।
सुनहु मान तजि मोर सिखावन।।
देखहु तुम निज कुलहि विचारी।
भ्रम तजि भजहु भगत भयहारी।।
जाके डर अति काल डराई।
जो सुर असुर चराचर खाई।।

तासों बयरु कबहुं नहिं कीजै ।
मोरे कहें जानकी दीजै ।।

"हे रावण, मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं । तुम घमंड को छोड़कर मेरी बात सुनो । तुम अपने पवित्र कुल का विचार करके देखो । तुम भ्रम को छोड़कर भक्तों के भय को मिटानेवाले श्रीराम का भजन करो । जिनके डर से काल भी डरता है, जो देवता, राक्षस और सारे चराचर को नष्ट कर देनेवाले हैं, उनसे तुम किसी प्रकार बैर मत करो । मेरा कहना मानकर तुम सीताजी को वापस लौटा दो ।"

हनुमानजी ने रावण से यह भी कहा, "भगवान राम की यदि तुम शरण में जाओगे तो वह करुणा-सागर श्रीराम तुम्हारे सारे अपराध क्षमा करके तुमको अपनी शरण में ले लेंगे । राम शरणागत की रक्षा करते हैं । वह करुणा के सागर हैं ।"

हनुमान ने रावण को राजनीति की बात समझाते हुए बताया कि अब उसकी इसीमें भलाई है कि वह रामचंद्रजी का प्रिय बन जाय । हनुमान कहने लगे––

रामचरन पंकज उर धरहू ।
लंका अचल राजु तुम्ह करहू ।।
रिषि पुलस्ति जनु बिमल मयंका ।
तेहि ससि मंहु जनि होहु कलंका ।।

"तुम रामचंद्रजी के चरणकमलों को हृदय में धारण करो और लंका का अचल राज्य करो । तुम पुलस्त्य ऋषि के चंद्रमा के समान उज्ज्वल यश में कलंक मत बनो ।"

राम नाम बिनु गिरा न सोहा।
देख बिचारि त्यागि मद मोहा॥
राम बिमुख संपति प्रभुताई।
जाइ रही पाई बिनु पाई॥

हनुमान ने कहा, "सुन रावण! राम-नाम के बिना वाणी की कोई शोभा नहीं। इस बात को तुम मद और मोह छोड़कर देखो। जो व्यक्ति राम के विमुख होता है उसकी संपत्ति और उसका बड़प्पन सब जाता रहता है। उनका पाना-न-पाना दोनों बराबर हैं।"

इस प्रकार विनम्र भाव से समझाने के बाद हनुमान ने रावण को भय दिखाते हुए कहा--

सुनु दसकंठ कहउं पन रोपी।
विमुख राम त्राता नहिं कोपी॥

"हे रावण, सुनो। मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूं कि श्रीराम के विरुद्ध होनेवाले की कोई भी रक्षा नहीं कर सकता।"

यह सब होने पर भी हनुमान की बातों का रावण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह तो अपने राजमद में चूर हो रहा था। वह राम के महाबली, पराक्रमी और तेजस्वी होने की बात सुनकर तनिक भी भयभीत न हुआ।

बोला बिहंसि महा अभिमानी।
मिला हमहिं कपि गुर बड़ ग्यानी॥
मृत्यु निकट आई खल तोही।
लागेहि अधम सिखावन मोही॥

महा घमंडी रावण हँसकर कहने लगा, "हमें यह बंदर बड़ा

ज्ञानी गुरु मिला है। अरे दुष्ट, मालूम पड़ता है कि तेरी मौत निकट आगई है। अधम, तू मुझे शिक्षा देने चला है ?"

उलटा होइहि कहा हनुमाना।
मतिभ्रम तोरि प्रगट मैं जाना।।

रावण की इस तरह की बातों को सुनकर हनुमान ने कहा, "इसका उल्टा ही होगा। मृत्यु मेरी नहीं तेरी आई है। इसीलिए तेरी बुद्धि में भ्रम पैदा हो गया है।"

यह सुनकर रावण और भी क्रुद्ध हो उठा। जिस समय रावण और हनुमान की यह बातें हो रही थीं, उसी समय वहां रावण का भाई विभीषण आ गया। रावण उस समय अपने योद्धाओं से कह रहा था कि इस वानर को मार डालो।

रावण के योद्धा अपने स्वामी की आज्ञा सुनते ही हनुमान को मारने के लिए आगे बढ़े।

नाइ सीस करि विनय बहूता।
नीति विरोध न मारिअ दूता।।
आन दण्ड कछु करिअ गोसाईं।
सबही कहा मंत्र भल भाई।।

विभीषण ने सबकुछ सुनकर अपने भाई रावण को नीति की बातें समझाते हुए कहा, "इसको मारना नहीं चाहिए बल्कि इसे कोई और दंड दिया जाय।" वहांपर जो और सभासद थे उन्होंने भी विभीषण की बात को ठीक बताया। सबकी यही सलाह हुई कि वानर को मारा न जाय।

इसपर रावण ने हँसकर कहा, "अच्छा तो इसके अंग भंग कर देने चाहिए। बिना किसी दंड के इसका चला जाना ठीक नहीं।"

कपि कें ममता पूंछ पर, सबहिं कहउं समुझाइ।
तेल बोरि पट बांधि पुनि, पावक देहु लगाइ॥

"वानर को अपनी पूंछ बहुत प्यारी होती है। इसलिए इसकी पूंछ पर तेल में कपड़ा डुबोकर बांधो और फिर उसमें आग लगा दो।"

पूंछहीन बानर तहं जाइहि।
तब सठ निज नाथहिं लै आइहि॥
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई।
देखउं मैं तिन्ह कै प्रभुताई॥

रावण कहने लगा, "जब बिना पूंछ का यह वानर अपने स्वामी के पास जायगा तब यह मूर्ख अपने स्वामी को यहां ले आवेगा। जिसकी इसने इतनी अधिक बढ़ाई की है, मैं भी तो उसके बड़प्पन को देख लूं।"

: ३ :

लंका-दहन

बचन सुनत कपि मन मुसुकाना।
भइ सहाय सारद मैं जाता॥

रावण की बात सुनकर हनुमानजी मन-ही-मन मुसकाये। वह सोचने लगे कि सरस्वती ने उनकी रक्षा की, जो रावण के मुख से इस तरह की बात निकली।

जातु धानु सुनि रावन बचना।
लागे रचै मूढ़ सोइ रचना॥

इधर रावण के आदेश को सुनकर लंका के रहनेवाले हनुमानजी की पूंछ में आग लगाने की तैयारी करने लगे। वे बहुत-सा

कपड़ा और तेल ले आये और हनुमान की पूंछ पर लपेटना आरंभ कर दिया। लपेटते-लपेटते लंका में कपड़ा, तेल और घी नहीं रहा, क्योंकि हनुमानजी ने खेल-ही-खेल में पूंछ बहुत बढ़ा ली। लंका के रहनेवाले तमाशा देखने के लिए इकट्ठे होगये। उनमें से कोई हनुमानजी के लात मारने लगा और कोई उनकी हँसी करने लगा।

रहा न नगर बसन घृत तेला।
बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपि खेला।
कौतुक कहं आये पुरबासी।
मारहिं चरन करहिं बहु हांसी ॥



वह एक महल से दौड़ कर दूसरे पर जाने लगे।

वे ढोल बजाने और तालियां पीटने लगे। उन्होंने हनुमानजी

को सारे नगर में घुमाया। इसके बाद उन्होंने उनकी पूंछ में आग लगा दी। जब हनुमान ने देखा कि पूंछ में आग लग गई है तो वह छोटे आकारवाले बन गये। वह उन सबके बंधन से छुटकारा पाकर सोने की अटारियों पर चढ़ गये। उनको देखकर राक्षसों की स्त्रियां डरने लगीं। जिस समय हनुमानजी की पूंछ में आग लगी उसी समय तेज हवा चलने लगी। वह एक महल से दौड़कर दूसरे पर जाने लगे। आग की तेज लपटें नगर में चारों ओर फैल गईं, जिससे नगरवासियों का सामान भी जलने लगा।

तात मातु हा सुनिअ पुकारा।
एहिं अवसर को हमहि उबारा॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई।
बानर रूप धरें सुर कोई॥

नगरवासी हाहाकार करते हुए कहने लगे, "हाय बाप, हाय मैया। इस समय हमें कौन बचायेगा और कौन हमारी पुकार सुनेगा? हमने तो पहले ही कहा था कि यह वानर नहीं है, बल्कि वानर का रूप बनाये हुए कोई देवता है।"

जारा नगर निमिप एक माहीं।
एक विभीषन कर गृह नाहीं॥

इस तरह बहुत थोड़े समय में ही सारा नगर जलकर राख हो गया, परंतु विभीषण का घर जलने से बच गया। हनुमान ने उलट-पलटकर सारी लंका जला दी। इसके बाद वह समुद्र में कूद पड़े। वहां उन्होंने अपनी पूंछ को बुझाया।

पूंछ बुझाई खोइ श्रम, धरि लघु रूप बहोरि।
जनक सुता के आगें, ठाढ़ भयउ कर जोरि।

हनुमान अपनी पूंछ को बुझाकर, थकावट को दूर करके और फिर छोटा-सा रूप बनाकर सीताजी के पास गये। वह उनके आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गये।



वह सीताजी के सामने हाथ जोड़कर खड़ होगये

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा।
जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा॥
चूड़ामनि उतार तब दयऊ।
हरष समेत पवन सुत लयऊ॥

हनुमानजी ने सीताजी से प्रार्थना की, "माता, मुझे आप अपना कोई ऐसा चिह्न दीजिये जैसा रामचंद्रजी ने मुझे दिया था।"

इतना सुनकर सीताजी ने हनुमानजी को अपनी चूड़ामणि

उतारकर दी। हनुमान ने उसे बड़े हर्ष के साथ ले लिया।

कहेहु तात अस मोर प्रनामा।
सब प्रकार प्रभु पूरन कामा॥
दीन-दयालु बिरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

सीताजी ने कहा, "हे हनुमान, तुम श्री रामचंद्रजी से मेरा प्रणाम कहना, और उनसे यह भी कहना कि आप दीनों पर दया करनेवाले हैं। आप मेरे दुखों को दूर कीजिये। राम के बाणों में अपार शक्ति है। हे हनुमान, तुम उनको उनके बाणों की शक्ति याद करा देना।"

इतना कहकर सीताजी बहुत अधीर हो उठीं तथा उन्होंने बहुत ही निराशाजनक स्वर में कहा--

मास दिवस महुं नाथु न आवा।
तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा॥

"यदि एक मास तक प्रभु राम नहीं आये तो फिर वह मुझे जीवित नहीं पायेंगे।" इन शब्दों में सीताजी ने अपने हृदय की सारी व्याकुलता प्रकट की। रामचंद्रजी के दूत हनुमान के आने से उन्हें बहुत संतोष हुआ था, परंतु अब उसके जाने से सीताजी की व्याकुलता बहुत बढ़ गई।

कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना।
तुम्हहू तात कहत अब जाना॥
तोहि देखि सीतलि भइ छाती।
पुनि मो कहुं सोइ दिनु सो राती॥

सीताजी व्याकुल मन होकर कहने लगीं, "हे हनुमान, कहो,

मैं किस तरह जीवित रहूं। हे तात, तुम भी अब जाने को कह रहे हो। तुमको देखकर मेरी छाती ठंडी हुई थी, परंतु मेरेलिए फिर वही दिन और वही रात।"

हनुमानजी ने सीताजी को सब तरह से धीरज बंधाया। उन्होंने सीताजी के चरणकमलों में सिर नवाकर रामचंद्रजी की सेवा में पहुंचने की बात कही। सीताजी उन्हें देर तक नहीं रोक सकती थीं। उनका वापस जाना भी अत्यंत आवश्यक था। सो हनुमान वहां से चल दिये। लंका से चलते समय उन्होंने घोर गर्जना की।

: ४ :

हनुमान की वापसी

हनुमान की शक्ति के कारण सारी लंका में भय छा गया। उनके लंका जलाने के कारण किसीमें यह शक्ति नहीं रही कि वह उनको पकड़ने का साहस करे। उनकी गर्जना सुन-कर नर और नारी जहां-तहां छिप गये।

नाघि सिंधु एहि पारहि आवा।
सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना।
नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना॥

लंका से चलकर हनुमान समुद्र को लांघकर इस पार आ गये। उन्होंने वानरों को अपने आने की सूचना किलकारी मारकर दी। हनुमान को देखकर सारे वानर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उस समय अपना नया जन्म हुआ समझा; क्योंकि वे समझ रहे थे कि यदि

सीता का पता न चला और हनुमान लौटकर न आये तो सुग्रीव उन्हें जीवित न छोड़ेगा।

मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा।
कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा।।
मिले सकल अति भये सुखारी।
तलफत मीन पाव जिमि वारी।।

हनुमान का मुख बड़ा प्रसन्न था। उनके शरीर पर एक तरह का तेज दिखाई पड़ रहा था। इस सबको देखकर वानरों ने समझ लिया कि हनुमान ने रामचंद्रजी का काम पूरा कर दिया है। सारे वानर हनुमान से मिले और वे बड़े सुखी हुए। जैसे तड़पती हुई मछली को पानी मिल जाता है ऐसे ही वानरों को हनुमान मिल गये।

इसके बाद वे सब श्रीरामचंद्रजी के पास चले। रास्ते में वे हनुमान से तरह-तरह की बातें पूछते थे। इस तरह चलते-चलते वे मधुबन में पहुंच गये।

तब मधुबन भीतर सब आए।
अंगद संमत मधुफल खाए।।
रखवारे जब बरजन लागे।
मुष्ठि प्रहार हनत सब भागे।।

सारे वानर मधुबन के भीतर घुस गये। उन्होंने अंगद के कहने से मीठे-मीठे फल खाये। जब रखवालों ने इनको ऐसा करने से रोका तो उन्होंने रखवालों के घूंसे मारे। मार पड़ने पर वे सब रखवाले भाग गये।

जाइ पुकारे ते सब, बन उज्जर युवराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि, करि आए प्रभु काज।।

रखवालों ने बाग उजाड़ने की खबर सुग्रीव को दी। उन्होंने यह भी बताया कि युवराज अंगद सारा बाग उजाड़ रहे हैं। सुग्रीव उनकी बात सुनकर नाराज नहीं हुआ, बल्कि बड़ा प्रसन्न हुआ।

जौं न होति सीता सुधि पाई।
मधुबन के फल सकहिं कि खाई॥
एहि विधि मन बिचारि कर राजा।
आइ गए कपि सहित समाजा॥

उसने समझ लिया कि हनुमान, अंगद और वानर श्रीराम का कार्य बना लाये हैं। अगर उन्होंने सीता का पता न लगाया होता तो वे मधुबन में आकर इस तरह शरारत नहीं कर सकते थे और न वहां फल खा सकते थे। इधर सुग्रीव यह सोच ही रहे थे कि इतने में वानर-सेना भी वहां आ गई।

आइ सबन्हि नावा पद सीसा।
मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा॥
पूंछी कुसल कुसल पद देखी।
राम कृपा भा काजु बिसेषी॥

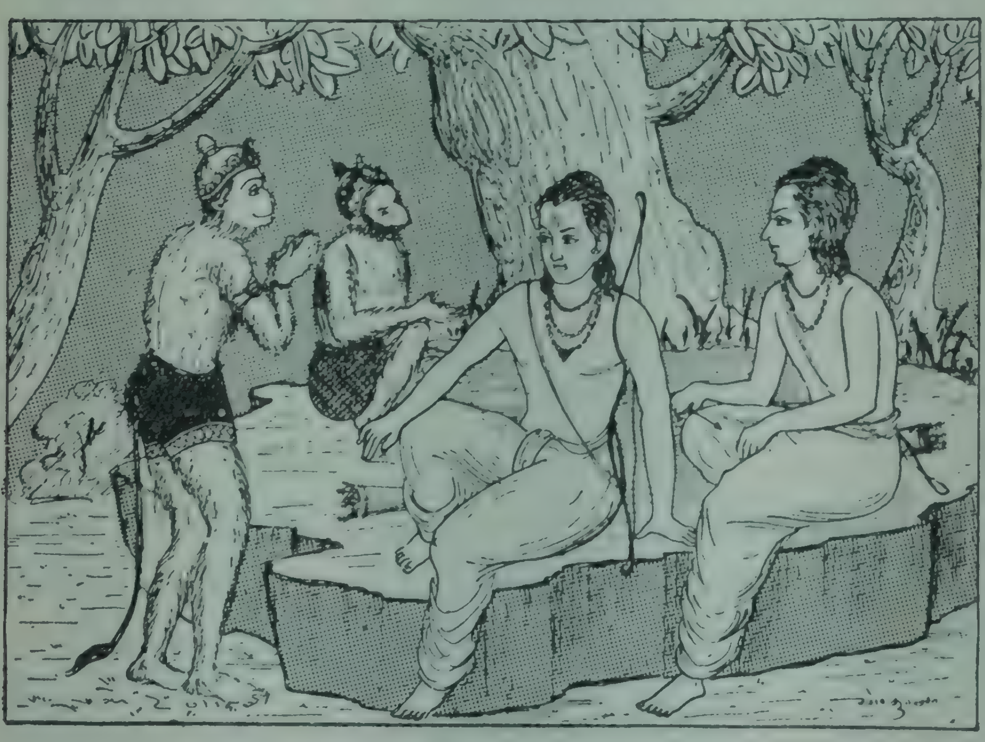
सारे वानरों ने सुग्रीव के पास आकर उसके चरणों में अपना सिर झुकाया। सुग्रीव उन सबसे बड़े प्रेम के साथ मिले। उन्होंने वानर-सेना से कुशलता पूछी। वानरों ने सुग्रीव को उत्तर देते हुए कहा, "आपके चरणों के दर्शन से सब कुशल है। श्रीराम की कृपा से काम बड़ी सफलता के साथ पूरा हुआ है।"

नाथ काजु कीन्हिउ हनुमाना।
राखे सकल कपिन्ह के प्राना॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ।
कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ॥

वानर कहने लगे, "हे स्वामी, हनुमान ने ही सारा कार्य पूर्ण किया है। उन्होंने सारे वानरों की जान बचा ली।" वानरों की यह बात सुनकर सुग्रीव हनुमान से दुबारा मिले। इसके बाद वे सारे वानरों को साथ लेकर रामचंद्रजी की सेवा में चले गये।

राम कपिन्ह जब आवत देखा।
किएं काजु मन हरष बिसेषा।।
फटिकसिला बैठे द्वौ भाई।
परे सकल कपि चरनन्हि जाई।।

जब रामचंद्रजी ने वानरों को उनका काम करके आते हुए देखा तो उनके मन को बड़ी खुशी हुई। उस समय दोनों भाई एक श्वेत शिला पर बैठे हुए थे। सारे वानर वहां पहुंचे और राम



वानरों ने राम को प्रणाम किया

के चरणों में प्रणाम किया।

प्रीति सहित सब भेंटे, रघुपति करुना पुंज।
पूंछी कुसल नाथ अब, कुसल देखि पद कंज ।।

श्रीराम ने उन सबसे बड़े प्रेम के साथ भेंट की। सारे वानर बड़े प्रसन्न थे। श्रीरामचंद्रजी ने उनसे कुशलता पूछी। उन्होंने कहा, "नाथ, आपके चरण कमलों के दर्शन से सब तरह की कुशलता है।"

जामवन्त कह सुनु रघुराया।
जापर नाथ करहु तुम्ह दाया ।।
ताहि सदा सुभ कुसल निरन्तर।
सुर नर मुनि प्रसन्नता ऊपर ।।

जामवंत ने रामचंद्रजी से कहा, "हे रघुनाथजी, सुनिये। जिसपर आपकी कृपा होती है उसका सदा कल्याण होता है और वह हमेशा कुशलता से रहता है। देवता, मनुष्य और मुनि लोग तक उससे प्रसन्न रहते हैं।"

प्रभु की कृपां भयउ सबु काजू।
जन्म हमार सुफल भा आजू ।।
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी।
सहसहुं मुख न जाइ सो बरनी ।।

जामवंत कहने लगे, "प्रभु की कृपा से सब काम हो गया। आज हमारा जन्म सफल हो गया। हे नाथ, हनुमानजी ने जो काम किया है वह हजार मुखों से भी बयान नहीं किया जा सकता।"

सुनत कृपानिधि मन अति भाए।
पुनि हनुमान हरषि हियं लाए ।।

कहहु तात केहि भांति जानकी।
रहति करति रक्षा स्वप्रान की।।

जामवंत की बात सुनकर कृपा के सागर श्रीराम मन में बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने प्रसन्न होकर हनुमान को फिर से गले लगा लिया। उन्होंने हनुमान से पूछा, "हे तात, कहो सीता किस तरह से रहती हैं और किस तरह से अपने प्राणों की रक्षा करती हैं।"

: ५ :

सीता की दशा का वर्णन

नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित, जाहिं प्रान केहिं बाट।।

हनुमान ने कहा, "आपका नाम रात-दिन सीताजी का पहरा देनेवाला है। आपका ध्यान ही किवाड़ों के समान है। सीताजी अपनी आंखें अपने पैरों की ओर लगाये रहती हैं, जो एक तरह से ताले का काम करती हैं। ऐसी दशा में प्राण जायं तो किस रास्ते से जायं ?"

चलति मोहिं चूड़ामनि दीन्ही।
रघुपति हृदयं लाइ सोइ लीन्ही।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी।
बचन कहे कछु जनक कुमारी।।

हनुमानजी बोले, "जब मैं चलने लगा तो उन्होंने मुझे चूड़ामणि उतारकर दी।" श्रीराम ने हनुमान से चूड़ामणि ले ली और उसे अपने हृदय से लगा लिया।

हनुमानजी ने आगे कहा, "हे नाथ, दोनों आंखों में जल भरकर जानकीजी ने मुझसे कुछ बातें कहीं थीं।"

राम सीताजी के संबंध में सारी बातें सुनने के लिए स्वयं उतावले थे। बहुत समय के पश्चात उनको सीताजी का समाचार मिला था, इसलिए उन्होंने हनुमान से कहा; "तुम सीताजी की सभी बातों को मुझसे कहो।"

हनुमान ने उन बातों को विस्तार के साथ बताया, जो सीता ने हनुमान से अशोक-बाटिका से चलते समय कही थीं। सीताजी उस समय राम से मिलने के लिए बड़ी व्याकुल थीं। उन्होंने राम और लक्ष्मण दोनों के प्रति बड़ा आदर प्रकट किया। सीताजी चाहती थीं कि राम जल्दी-से-जल्दी आकर उन्हें वहां से ले जायं। वह रावण के बंधन में एक क्षण भी रहना नहीं चाहती थीं। हनुमान ने सीताजी की विपत्ति का वर्णन करते हुए कहा--

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना।
दीनबन्धु प्रन तारति हरना॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी।
केहिं अपराध नाथ हौ त्यागी॥

"माता सीता ने कहा, 'छोटे भाईसमेत प्रभु राम के पैर पकड़ना और उनसे यह कहना कि आप दीनबंधु हैं, आप शरण में आये हुए के दुखों को दूर करनेवाले हैं। सीता मन, वचन और कर्म से आपके चरणों के पीछे चलनेवाली है। फिर आपने किस अपराध से उसे भुला दिया है।"

अवगुन एक मोर मैं माना।
बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना॥

हनुमानजी कहने लगे कि सीताजी ने बड़े दुख के साथ यह भी कहा था, "मैं अपना एक कसूर जरूर मानती हूं कि प्रभु राम से अलग होते ही मैंने अपने प्राण क्यों नहीं त्याग दिये।"

सीता कै अति विपति बिसाला।
बिनहिं कहें भलि दीन दयाला ।।

सीताजी के अपार दुख को प्रकट करते हुए हनुमान कहने लगे "हे प्रभु! सीताजी की महान विपत्ति को आपके सामने न कहना ही अच्छा है।"

इस तरह हनुमान ने सीताजी की सारी दुख-कथा कह सुनाई। उन्होंने बताया कि जानकीजी का एक-एक पल कल्प की तरह से बीतता है। इसलिए प्रभु आप जल्दी से लंका की ओर चलिये। वहां पहुंचकर राक्षसों को जीतकर सीताजी को ले आइये।

सुनि सीतादुख प्रभु सुख अयना।
भरि आये जल राजिव नयना ।।

हनुमान से सीताजी की दुखभरी कथा को सुनकर सुख के धाम श्रीराम की कमल जैसी आंखों में पानी भर आया।

कुछ देर और सीताजी के बारे में बातें होती रहीं। रामचंद्रजी इस बात से बड़े प्रसन्न थे कि उनके भक्त हनुमान ने उन्हें सीताजी का ठीक प्रकार से समाचार लाकर दिया है। वह हनुमान की बार-बार बड़ाई करने लगे।

सुनु कपि तोहि समान उपकारी।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनु धारी ।।
प्रति उपकार करौं का तोरा।
सन्मुख होइ न सकत मन मोरा ।।

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं ।
देखेउं करि विचार मन माहीं ।।

श्रीराम कहने लगे, "हे हनुमान सुन, तेरे बराबर मेरी भलाई करनेवाला कोई भी शरीरधारी देवता, मनुष्य या मुनि नहीं है । मैं बदले में तेरा क्या उपकार करूं । हे पुत्र सुन, मैंने अपने मन में भली प्रकार विचार कर देख लिया है कि मैं तेरी भलाई का बदला नहीं चुका सकता ।"

जब हनुमानजी ने श्रीराम के मुंह से इस तरह की बातें सुनीं तो उनका मन प्रेम से भर आया । वह बार-बार श्रीराम के चरणों में गिरे ।

कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा ।
कर गहि परम निकट बैठावा ।।
कह कपि रावन पालित लंका ।
केहि विधि दहेउ दुर्ग अति बंका ।।

रामचंद्रजी ने भी हनुमान को उठाकर अपनी छाती से लगाया और उनका हाथ पकड़कर अपने पास बिठा लिया । राम हनुमान से लंका की बात पूछने लगे । उन्होंने कहा, "हे हनुमान, मुझे यह भी तो बताओ कि तुमने लंका के बड़े विशाल किले को, जिसकी रक्षा रावण करता है, किस तरह से जलाया ।"

प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ।
बोला बचन विगत अभिमाना ।।

हनुमान ने समझ लिया कि प्रभु राम उनसे अत्यंत प्रसन्न हैं । उन्होंने अभिमान को छोड़कर लंका जलाने का सारा समाचार बताना प्रारंभ कर दिया ।

साखामृग कै बड़ि मनुसाई ।
साखा ते साखा पर जाई ।।
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा ।
निसिचर गन बधि बिपिन उजारा ।।

हनुमान कहने लगे, "प्रभो, वानर का यह काम है कि वह वृक्ष की एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है । पहले मैंने समुद्र को लांघा । इसके बाद मैंने सोने की लंका को जलाया । मैंने वहां के राक्षसों को भी मार डाला और वहां के अशोकवन को भी उजाड़ डाला ।"

राम हनुमान की वीरता की बातों को बड़े ध्यान से सुनते रहे । उनके हृदय में हनुमान के प्रति पहले ही बहुत प्रेम था, परंतु लंका फूंकने और सीताजी के कुशल समाचार लाने से राम हनुमान से और अधिक प्रसन्न हुए ।

हनुमान के हृदय में भी श्रीराम के प्रति अगाध भक्ति और प्रेम था । हनुमान समझते थे कि प्रभु राम के भरोसे ही पर वह इतना काम कर पाये । उन्होंने राम से कहा––

सो सब तव प्रताप रघुराई ।
नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ।।

"हे रघुनाथजी, यह सब आपके प्रताप से ही हुआ है । हे नाथ ! इस काम में मेरी बड़ाई कुछ भी नहीं है ।"

अपनी दीनता और विनम्रता प्रगट करते हुए हनुमान ने श्रीराम की बड़ी प्रशंसा की । वह कहने लगे, "जिसपर आपकी कृपा होती है, उसके लिए कोई भी काम कठिन नहीं है । केवल आपका अनुकूल होना आवश्यक है ।"

: ६ :

लंका की ओर

इधर राम और हनुमान परस्पर बातें कर रहे थे, उधर वानर सेना इस बात पर हर्ष मना रही थी कि सीताजी का पता चल गया। वानर आनंदकंद भगवान राम का जय-जयकार करने लगे। उन्हें इस बात की प्रसन्नता थी कि हनुमान भगवान राम के काम आये।

तब रघुपति कपिपतिहिं बोलावा।
कहा चलैं कर करहु बनावा।।
अब बिलंबु केहि कारन कीजे।
तुरत कपिन कहुं आयसु दीजे।।

अब राम लंका जाकर सीताजी को वापस लाने की चिंता करने लगे। उन्होंने सुग्रीव को बुलाया और आज्ञा दी कि अब लंका चलने की तैयारी की जाय। राम की आज्ञा पाते ही सुग्रीव ने वानर-सेना को लंका पर चढ़ाई के लिए तैयार हो जाने का आदेश दिया।

सुग्रीव की आज्ञा पाते ही समस्त वानर लंका की ओर चलने को तैयार होने लगे। सुग्रीव के सेनापतियों ने अपनी-अपनी सेनाओं की संभाल करनी प्रारंभ कर दी।

प्रभु-पद-पंकज नावहिं सीसा।
गर्जहिं भालु महाबल कीसा।।
देखी राम सकल कपि सैना।
चितइ कृपा करि राजिव नैना।।

बलवान वानर और भालु श्रीराम के चरणों में मस्तक झुकाकर गर्जना करने लगे। उनमें बड़ा उत्साह पैदा हो रहा था। रामचंद्रजी ने अपने नेत्रों से उस विशाल वानर-सेना का अच्छी तरह से अवलोकन किया।

रामचंद्रजी को हनुमान, सुग्रीव, अंगद तथा अन्य शूर-वीरों पर पूरा विश्वास होगया कि वे लंका को विजय कर लेंगे। अकेले हनुमान के लंका को जला डालने से ही राम यह समझ गये कि उनकी सेना का बल अपार है, इसी तरह से सुग्रीव और उनके अन्य साथी यह समझ रहे थे कि उनपर जब राम की कृपा है तो वे निश्चय ही इस कार्य में सफल होंगे।

राम कृपा-बल पाइ कपिन्दा।
भये पच्छजुत मनहुं गिरिन्दा।।

राम की कृपा का बल पाकर वानर भी साहसवान बन गये, मानो पहाड़ों को ही पंख लग गये हों। वे हर्ष से उछलने-कूदने लगे। रामचंद्रजी ने इस प्रकार बड़े अच्छे मुहूर्त में लंका जीतने के लिए प्रस्थान किया।

तुलसी-राम-कथा-माला की पुस्तकें

१. राम-जन्म
२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह
४. राम-वनगमन
५. भरत-भेंट
६. पंचवटी में
७. सीता-हरण
८. सुग्रीव से मित्रता
९. सीता की खोज
१०. लंका-दहन
११. रामदूत अंगद
१२. लक्ष्मण-शक्ति
१३. लंका-विजय
१४. राज-तिलक

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे